

## “अमरकान्त के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति”

नवेन्द्र कुमार सिंह एवं कल्पना सिंह

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.343>

### शोध-सार

यथार्थवादी कथाकार के रूप में अमरकान्त हिन्दी साहित्य के जगमगाते सितारे हैं, अमरकान्त ने कहानियों एवं उपन्यासों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया है। उन्होंने भारतीय समाज के यथार्थ को बड़ी ही संवेदना और सहजता के साथ समाज में साझा करने का प्रयास किया है। उनके कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति का भाव आदर्शवादी अथवा स्थिर रूप में नहीं, बल्कि मध्यम वर्ग या निम्न मध्यम वर्ग के संघर्षों, पारिवारिक सम्बन्धों, सामाजिक मूल्य, परम्पराएँ, लोकाचार तथा परिवर्तित सामाजिक परिवेश में स्पष्ट रूप से देखा समझा जा सकता है। अमरकान्त के कथा-साहित्य में भारतीय संस्कृति मात्र, धार्मिक अनुष्ठानों, परम्परा या रीति-रिवाज में परिलक्षित नहीं होता है। बल्कि वह समाज में मनुष्य के व्यवहार एवं चेतना में भी परिवर्तित परिस्थितियों के झलक की अभिव्यक्ति होती है। अमरकान्त के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति एक गतिशील एवं परिवर्तन प्रक्रिया के रूप में भी स्पष्ट होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में अमरकान्त के कथा साहित्य के आलोक में लोकधर्म, परिवार तथा नैतिक एवं सामाजिक पक्षों की चर्चा की गई है।

**शब्द संकेत** – सामाजिक चेतना, मध्यम वर्ग, परिवर्तनकारी संस्कृति, आदर्श लोकभाषा, कथा साहित्य, आधुनिकता, भौतिकवाद, रीति-रिवाज

### प्रस्तावना –

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय संस्कृति का स्थान सबसे समृद्ध रही है। भारतीय संस्कृति की परम्परा में जहाँ विविधता में एकता, सहिष्णुता, परिवार, अध्यात्म, सह-अस्तित्व एवं मानवता के साथ-साथ लोकमंगल की भावना सर्वत्र व्याप्त रही है। समय, समाज एवं परिवेश के अनुरूप भारतीय संस्कृति की गतिशीलता परिवर्तनकारी रही है। भारतीय साहित्य में भी संस्कृति को सामाजिक चेतना का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना गया है। विभिन्न विद्वानों के साथ-साथ अमरकान्त का कथा साहित्य भी भारतीय संस्कृति से अछूता नहीं रहा, उनके साहित्य की विशेषता भारतीय जन-जीवन का सजीव चित्रण है जो भारतीय संस्कृति का आदर्श है। अमरकान्त के कथा साहित्य एवं कहानियों के पात्रों का चयन गाँव, कस्बा एवं साधारण मध्यम वर्गीय परिवार से किया गया है। ग्रामीण परिवेश के पात्रों को रहन-सहन, भाषा, व्यवहार, खान-पान, रीति-रिवाज एवं पारिवारिक सम्बन्धों में भारतीय संस्कृति की स्पष्ट झलक भी दिखाई पड़ती है। इनकी रचनाओं में भारतीय समाज का मानवीय एवं संवेदनशीलता का स्वरूप भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। वहीं समाज में व्याप्त असमानता एवं सामाजिक कुप्रथा एवं रूढ़ियों के प्रति भी बड़ी निर्भीकता के साथ आलोचना करते दिखाई पड़ते हैं। वास्तविक रूप में अमरकान्त सांस्कृतिक आदर्श के बजाय वास्तविक सामाजिक स्वरूप के चित्रण पर विश्वास करते हैं।

- प्रोफेसर एवं शोध पर्यवेक्षक, हिन्दी विभाग, बुन्देलखण्ड, महाविद्यालय, झांसी (उ०प्र०)।
- शोध छात्र : हिन्दी विभाग, बुन्देलखण्ड, महाविद्यालय, झांसी (उ०प्र०)।

अमरकान्त वास्तविक रूप से कस्बाई जीवन के कथाकार है, उनके कथा-साहित्य में ग्रामीण एवं कस्बाई संस्कृति के मिश्रण का पुट है जो सामाजिक परिवेश को जीवन्त रूप में प्रस्तुत करता है। जहाँ उनके पात्र सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ सामुदायिक जीवन को लोकव्यवहार के माध्यम से भारतीय संस्कृति का निर्वहन करते दिखाई पड़ते हैं। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है लोकजीवन को बाह्य दृष्टि के बजाय आन्तरिक दृष्टि से उसकी संवेदना को व्यक्त करना है।

अमरकान्त के कथा साहित्य में परिवार को जीवन की मूल इकाई माना गया है। पारिवारिक सम्बन्ध मात्र प्रेम और आत्मीयता को ही नहीं दर्शाते बल्कि आर्थिक कमजोरी एवं सामाजिक दबाव से भी प्रभावित होते दिखाई पड़ते हैं। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन तथा अन्य नातेदारी सम्बन्धों द्वारा पारिवारिक संरचना के परिवर्तन को चित्रित करने का प्रयास किया है। अमरकान्त का साहित्य त्याग, सहयोग, उत्तरदायित्व के साथ-साथ अपने से बड़ों के प्रति सम्मान जैसे सांस्कृतिक मूल्यों की बात करता है। अमरकान्त कथा साहित्य पीढ़ियों के बीच मतभेद एवं आर्थिक संघर्ष के तत्वों की भी व्याख्या करता है।

मध्यमवर्गीय जीवन एवं सांस्कृतिक चेतना के प्रति भी अमरकान्त के पात्र आर्थिक अभाव, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मूल्यों के बीच होने वाले संघर्ष के साथ परम्परागत मूल्यों एवं आधुनिक जीवन की आकांक्षाओं के द्वन्द्व के बीच गुजरता दिखाई पड़ता है। भारतीय संस्कृति के मूल आधारों मानवता, करुणा और सह-अस्तित्व के प्रति भी अमरकान्त के पात्र संघर्ष करता दिखाई पड़ता है। समाज के उपेक्षित, गरीब एवं संघर्षों के प्रति अमरकान्त की सहानुभूति स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। उनके कथानक में सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं मानवीय संवेदनाओं के साथ वह सजग पहरी की तरह प्रतिबद्ध दिखाई पड़ते हैं। यह कथाकार के स्वयं की संवेदना होती है जो स्वतः उसकी लेखनी में क्रमवद्ध हो जाती है।

भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य में नैतिक मूल्यों का चित्रण अमरकान्त की लेखनी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। आधुनिकता आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा एवं स्वार्थवादिता के कारण समाज में नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन की झलक मिलती है। अमरकान्त अपने साहित्य में कस्बाई जीवन के महत्व को अनदेखा नहीं करते हैं। कस्बा, गाँव और नगर के बीच एक विशिष्ट संस्कृति होती है जो परम्परा और आधुनिकता के बीच कड़ी का कार्य करते हैं। जिन्हें हम ग्रामीण-नगरीय सातत्य भी कहते हैं। अमरकान्त के कथा साहित्य में लोकभाषा, सामाजिक रीति-रिवाज, पड़ोस का धर्म एवं संस्कृति सामुदायिक सम्बन्ध जातिगत संरचना तथा आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण देखा जा सकता है। साथ ही अमरकान्त आधुनिक जीवन शैली के बीच मानवीय मूल्यों के क्षरण के प्रति सजग और सतर्क दिखाई पड़ते हैं।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जितनी भूमिका पुरुष समाज की है उतनी ही भूमिका स्त्रियों की भी होती है। किन्तु सामाजिक संरचना में व्याप्त असमानताओं का सामना उन्हें निरन्तर करना पड़ा है। आज भी हम स्त्रियों के अधिकारों उनकी स्वतंत्रता के प्रति चिन्तन करते हैं। अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य में स्त्री जीवन की समस्याओं एवं संघर्षों को भी चित्रित करने का प्रयास किया है। उनके कथा-साहित्य में स्त्री पात्रों की पारिवारिक उत्तरदायित्व के साथ सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति का

सामना करती हैं। स्त्री कथानक के माध्यम से लेखक का प्रयास भारतीय सामाजिक व्यवस्था की पितृ सत्तात्मक संरचना एवं लैंगिक असमानता को प्रत्यक्ष रूप से उजागर करने का है। यहां अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज एवं संस्कृति के भीतर महिलाओं की प्रस्थिति एवं उसके परिवर्तित स्वरूप को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

अमरकान्त के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति के एक महत्वपूर्ण पक्ष परम्परा एवं आधुनिकता के बीच मध्यम वर्गीय संघर्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भारतीय समाज तीव्र गति से परिवर्तनशील रहा है। लेकिन परम्परागत संस्कार अभी भी भारतीय समाज को प्रभावित करता है। उनके पात्र एक ओर आधुनिक शिक्षा, रोजगार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर बढ़ते हैं, वहीं दूसरी ओर पारिवारिक परम्पराओं और सामाजिक मान्यताओं से बंधे रहते हैं। यहीं द्वन्द्व उनके साहित्य को सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ता है।

भारतीय संस्कृति समानता, मानवता की भावना पर आधारित होने का दावा करती है, किन्तु सामाजिक यथार्थ में वर्गीय और आर्थिक असमानताएँ विद्यमान हैं। अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य में इस विरोधाभास को अत्यन्त प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है। उनके पात्र सामाजिक संरचना के अन्दर समाहित असमानताओं से संघर्ष करते हैं। आर्थिक विषमता, व्यक्ति की गरिमा और सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित करती है। अमरकान्त की दृष्टि में संस्कृति का वास्तविक मूल्य उसके मानवीय व्यवहार में समाहित है, न कि वाह्य परम्पराओं में।

अमरकान्त की भाषा सरल, सहज और जनजीवन के निकट है। उनकी भाषा में बनावटीपन नहीं झलकता, बोलचाल की भाषा, स्थानीय अभिव्यक्ति और सामान्य जीवन के संवाद उनकी रचनाओं को सांस्कृतिक रूप से और भी शक्तिशाली बनाते हैं। भाषा के माध्यम से अमरकान्त भारतीय समाज के जीवन्त वातावरण का निर्माण करते हैं। उनके भाषा शैली की सरलता ही उनके कथा साहित्य की सांस्कृतिक शक्ति है, क्योंकि इसके माध्यम से मध्यम वर्ग की वास्तविक संवेदनाओं की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है।

अमरकान्त का कथा साहित्य न केवल भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि वह जनमानस के मस्तिष्क पटल में विद्यमान चेतना तथा पारिवारिक नातेदारी के साथ-साथ सामाजिक नातेदारी के जाल और नैतिक मूल्यों की बुनावट बड़ी गहराई तक रची-बसी दिखाई पड़ती है। उनके कथा-साहित्य में करुणा एवं मानवता के आदर्श भावना के साथ बहादुर की कहानी के माध्यम से नगरीकरण के प्रभाव में ग्रामीण परिवेश में पला-बढ़ा व्यक्ति किस प्रकार ग्रामीण एवं कस्बाई संस्कृति के मूल्यों से दूर होता जा रहा है। अमरकान्त ने अपने कथा साहित्य के पात्र 'बहादुर' जो ग्रामीण परिवेश का ईमानदार, निष्कपट और सादगी पसन्द नौवजवान बताया है, किन्तु झूठी शान और भौतिकवाद पोषित शहरी मध्यम वर्गीय परिवार द्वारा लगाये गये झूठे चोरी के आरोप ने उसे भीतर तक झकझोर दिया, जो कहीं न कहीं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों यथा-सहानुभूति एवं संवेदन-शीलता को नष्ट कर देती है। नगरीय संस्कृति का अकेलापन स्वार्थवादिता तथा भौतिकवाद की अंधी दौड़ कहीं न कहीं पारम्परिक भारतीय जीवन मूल्यों के विघटन का बड़ा कारण दिखाई पड़ता है।

अमरकान्त के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति का स्वरूप बड़ा ही व्यापक और यथार्थवादी है। अमरकान्त ने भारतीय संस्कृति को मात्र परम्परा विश्वास एवं रीजि-रिवाजों तक सीमित नहीं किया है बल्कि उसे वह मध्यम वर्गीय मानव के जीवन संघर्ष, सम्बन्धों संवेदनाओं एवं सामाजिक व्यवहार को

भी अंकित करने का प्रयास किया है। अमरकान्त के साहित्य में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों मानवीयता, लोकधार्मिता, पारिवारिक सन्दर्भ एवं नैतिक पक्षों को भी दिखाने का कार्य किया है। वह भारतीय संस्कृति के अन्तः स्थल में विद्यमान रूढ़ियों, परम्पराओं, असमानता एवं मूल्यों में आये संकट को भी समाज के समक्ष रखने का प्रयास करते हैं।

अमरकान्त का कथा साहित्य भारतीय समाज के संक्रमणकालीन परिस्थिति का महत्वपूर्ण पक्ष है। संस्कृति अतीत की स्थिर विरासत न होकर निरन्तर परिवर्तनशील सामाजिक प्रक्रिया का पक्ष है जो भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण को विशाल बनाती है। अतः इस अध्ययन के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि अमरकान्त के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति के वास्तविक जन जीवन का आभास होता है। उनका साहित्य समाज की आत्म संवेदना, संघर्ष तथा सांस्कृतिक परिवर्तन की सशक्त पहचान स्थापित करता है।

#### संदर्भ सूची –

1. अमरकान्त ; प्रतिनिधि कहाँनियों, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. अमरकान्त ; दोपहर का भोजन, विभिन्न संस्करण, नई दिल्ली।
3. अमरकान्त ; जिन्दगी और जोक कहानी संग्रह
4. अमरकान्त ; नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सिंह नामवर ; नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. गोपाल राय; हिन्दी कहानी का इतिहास राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. दिनकर रामधारी सिंह; संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. शर्मा, राम विलास ; भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश
9. अमरकान्त ; कुहासा कथा साहित्य
10. अमरकान्त ; आकाश पक्षी उपन्यास